आज की मुरली का सार ---- Date: 11/05/2014

बाबा ने कहा, मास्टर सर्वशक्तिवान या मास्टर आल्माइटी अथॉरिटी होकर अपनी साकारी कर्मेन्द्रिया अर्थात कर्मचारी और साथ-साथ अपनी सूक्ष्म शक्तियां मन, बुद्धि, संस्कार अर्थात कार्य कलाओं को यथार्थ रीति से चलाने की अथॉरिटी बनो.

हम कैसे सच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान या मास्टर आल्माइटी अथॉरिटी बने?

अभ्यास करें, में आत्मा राजा हूं, इस साकारी कर्मेन्द्रियों की और अपनी सूक्ष्म शक्तियां मन, बुद्धि और संस्कार की में मालिक हूं. में आत्मा ही मन-वचन-कर्म से जो भी कर्म करती हूं, इस सूक्ष्म शक्तियां मन, बुद्धि और संस्कार और साकारी कर्मेन्द्रियों को युज कर करती हूं, तो हर कर्म की में आत्मा ही मालिक हूं. अगर हमें ये ध्यान सदा रहे के में आत्मा इस सूक्ष्म शक्तियां और साकारी कर्मेन्द्रिया द्वारा किया हुआ हर कर्म की मालिक हूं और हर कर्म की भोगना भी मुझे ही भोगनी पडेंगी तो में आत्मा गलत कर्म कभी नहीं करेगी. आत्मा अपना हर कर्म करने से पहले खुद में चेक कर सके इस लिए, आत्मा को अन्तरमुखि बनना पड़ेगा. अंन्तरमुखि अवस्था में रहने के लिये बाबा ने बताया हैं, बहार का देखते हुए भी न देखो, सुनते हुए भी ना सुनो. एक बाप से ही सुनो. ये प्रैक्टिस करनी हैं. अब समझा में आत्मा कैसे सच्ची मास्टर सर्वशक्तिवान या मास्टर आल्माइटी अथॉरिटी बन सकती हूं.

मास्टर सर्वशक्तिवान या मास्टर आल्माइटी अथॉरिटी वाली आत्मा की निशानी हैं, बाप-दादा द्वारा आत्मा को ज्ञान का, गुणों का, और शक्तिओं का जो खजाना प्राप्त हुवा हैं, उसे सदा धारण किये हुए, बाप-दादा के दिल तख्त नशीन बन, अतिइन्द्रिय सुख के झुले में झूलते हुए सदा फरिश्ते स्वरूप के नशे में रहती हैं.

महादानी आत्मा किसे कहेंगे?

जो आत्मा हर समय, संकल्प और कर्म द्वारा, बाप-दादा द्वारा जो ज्ञान का, गुणों का, और शक्तिओं का खजाना प्राप्त हुवा हैं, उसे सदा सेवा में अन्य आत्माओं को दान करता रहें, वही आत्मा महादानी हैं और जो महादानी हैं वही वरदानी भी बनती हैं. महादानी-वरदानी आत्मा ही विश्वकल्याणकारी कहलाती हैं. बाबा ने कहा सदैव जो मिलता रहता हैं वह देने से बढ़ेगा. महादानी बच्चों का ऐसा कोई समय या दिन नहीं जा सकता जिसमें दान न करें. चारों ही सब्जैक्ट में महादानी बनने के लिए अमृतवेले प्रोग्राम बनाओ. एक भी सब्जैक्ट में कम न होना चाहिए.

न्यारी-प्यारी आत्मा किसे कहेंगे?

एक बाप का प्यारा बनने के लिए सर्व से न्यारा बनना पड़ता हैं. जो आत्मा एक बाप से ही सर्व सम्बन्धों की प्राप्ति महसूस करती हैं, वह सर्व से न्यारी भी सहज ही हो जाती हैं. सबसे न्यारा और एक बाप का प्यारा उसे ही कमल पुष्प समान कहा जाता हैं.

योग्य टीचर कि निशानी क्या हैं?

योग्य टीचर अर्थात हर सेकेण्ड, हर संकल्प द्वारा सेवा करने वाली. योग्य टीचर अर्थात योगयुक्त अर्थात युक्तियुक्त. जो योगयुक्त होगा उसका हर संकल्प समर्थ होगा. जब संकल्प रुपी बीज समर्थ होगा तो फल भी समर्थ होगा. निमित अर्थात एकजाम्पल हैं, जैसे एकजाम्पल हैं वैसे और भी होंगे.

फस्टॅ क्लास सेवाधारी की विशेषता कौन सी होती हैं?

फस्टॅ क्लास सेवाधारी की विशेषता हैं, चाहे जो भी स्थूल सेवा कर रहे हैं, लेकिन हर कर्म द्वारा, हर कदम द्वारा बाप के गुण और कर्तव्य को प्रसिद्ध करें. सेवा करते हुए भी अन्य आत्मा अनुभव करें की ये मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सुख का सागर या मास्टर शांति का सागर आत्मा हैं, उसे ही फस्टॅ क्लास सेवाधारी कहा जायेगा. फस्टॅ क्लास सेवाधारी अर्थात एक समय में तीन प्रकार की, यानी मूर्त द्वारा, मनसा द्वारा और कर्म द्वारा भी सेवा करें. मूर्त से अलौकिक सेवाधारी की झलक अर्थात फरिश्तेपन की झलक दिखाई दे और मनसा अपने श्रेष्ठ वृति द्वारा सेवा करें, और कर्म से अन्य आत्मा को ज्ञान, सुख, और शांति देने की सेवा करें - ऐसे एक ही समय में तीन प्रकार की सेवाएं इकट्ठी करें इसको कहा जाता हैं फस्टॅ क्लास सेवाधारी.